राजगीरा / रामदाना

राजगीरा एक बहुउद्देश्यी धान्य स्वरूप फसल है इसकी खेती बीज, हरे एवं सूखे चारे, प्रारम्भिक में सब्जी व सजावट के लिए की जाती है। इसकी खेती मुख्यतया उत्तर पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में होती रही है परन्तु अब देश के अन्य भागों में भी होने लगी है। इसका दाना काफी पौष्टिक होता है। इसकी विभिन्न किस्मों में सामान्यतया 12–17 प्रतिशत प्रोटीन तथा प्रोटीन में 5.5 प्रतिशत लाइसिन होता है। राजगीरा एवं गेहूं की मिश्रित आटे से बनी रोटी को एक पूर्ण आहार माना जाता है। इसके दानों को फुलाकर कई तरह के खाद्य पदार्थ, विशेष रूप से लड्डू बनाना अधिक प्रचलित है। इसके अलावा कई प्रकार के बेकरी खाद्य पदार्थ जैसे बिस्किट, केक पेस्ट्री, केक आदि भी बनाये जाते हैं। राजगीरा से बनाये गये बाल आहार को उत्तम माना जाता है। इसकी पत्तियों में ऑक्जलेट एवं नाइट्रेट की मात्रा कम होने के कारण यह एक पौष्टिक एवं सुपाच्य हरा चारा माना जाता है। राजगीरा तेल रक्तदबाव व कोरोनरी हृदय बीमारी में भी उपयोगी है।

उन्नत किस्में –

आर.एम.ए. 4 (2009) – यह किस्म राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कृषि अनुसंधान केन्द्र मण्डोर द्वारा विकसित की गई है। पौधे की ऊँचाई लगभग एक मीटर होती है। फसल लगभग 120–130 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। दानों में 12.6 प्रतिशत प्रोटीन तथा प्रोटीन में 5.1 प्रतिशत लाइसिन होता है। इसकी औसत उपज 13–14 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर होती है।

आर.एम.ए. 7 (2011) – यह किस्म राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कृषि अनुसंधान केन्द्र मण्डोर द्वारा विकसित की गई है। पौधे की ऊँचाई लगभग 1.20 मीटर होती है। फसल लगभग 125–130 दिन में

पक कर तैयार हो जाती है। दानों में 12.1 प्रतिशत प्रोटीन तथा प्रोटीन में 5.8 प्रतिशत लाइसिन होता है। इसकी औसत उपज 14 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर होती है।

खेत की तैयारी – राजगीरा का बीज काफी छोटा होता है इसके लिये खेत को अच्छी तरह जुताई कर तैयार करें। खेत में ढेले नहीं होने चाहिए।

खाद व उर्वरक – अच्छी सड़ी हुई 8–10 टन गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर बुवाई के एक माह पहले कम से कम तीन साल में एक बार अवश्य डालें। अच्छी फसल के लिए 60 कि.ग्रा. नत्रजन एवं 40 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हैक्टेयर देवें। नत्रजन की आधी मात्रा व फास्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय तथा शेष नत्रजन की आधी–आधी मात्रा पहली व दूसरी सिंचाई के साथ देवें।

बुवाई का समय – राजगीरा की बुवाई के लिये अक्टूबर का अन्तिम सप्ताह उपयुक्त है बुवाई में देरी से उपज में कमी होती है।

बीज की मात्रा व बुवाई – बुवाई के लिए 1.5 से 2.0 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टेयर पर्याप्त होता है। बीज अत्यन्त हल्का एवं बारीक होता है। अतः बीज में बारीक मिट्टी मिलाकर बुवाई करने से बीज की मात्रा नियंत्रण में रहेगी। कतार से कतार 30 – 45 सेमी दूरी रखें तथा बीजों को 1.5 – 2.0 से.मी. गहरा बोयें। पहली निराई गुड़ाई के समय पौधों के बीच की दूरी 10–15 से.मी. कर देवें।

सिंचाई – राजगीरा को 4–5 सिंचाई की आवश्यकता होती है। बुवाई के बाद पहली सिंचाई 5–7 दिन बाद तथा बाद में 15 से 20 दिन के अन्तराल पर फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

निराई – गुड़ाई – खरपतवार नियन्त्रण के लिए बुवाई से 15 – 20 दिन बाद पहली तथा 35 से 40 दिन बाद दूसरी निराई गुड़ाई करें। यदि पौधों की संख्या अधिक हो तो पहली निराई के साथ ही अनावश्यक पौधों को निकाल कर पौधे से पौधे की दूरी 10–15 से.मी. कर देवें।

कटाई – फसल 120 से 135 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। पकने पर फसल पीली पड़ जाती है। समय पर कटाई नहीं करने पर दानों के झड़ने का अन्देशा रहता है। फसल को काटते व सुखाते समय ध्यान रखें कि दानों के साथ मिट्टी नहीं मिले।

बूँद बूँद सिंचाई से लाभ –

- **पानी की बचत**
- **सिंचित क्षेत्र में बढ़ोत्तरी**
- **खरपतवार कम**
- **लागत में कमी**
- **उत्पादन ज्यादा**